कमज़ोरों की क्राँति

शिष्य थॉमसन

''दीनात्मानो धन्याः यतः स्वर्गराज्यं तेषामेव''

(धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। मत्ती 5:3)

संसार में क्राँति हमेशा शक्तिशाली लेकर आते हैं। वे शक्ति का प्रयोग करते हैं। जिनके पास बल है, वे अपनी विचारधारा और शासन को दूसरों पर लाद देते हैं। और स्वेच्छा से नहीं पर बलपूर्वक परिवर्तन लाते हैं। और उसे क्राँति कहते हैं। चीन के कम्युनिस्ट नेता माओ ने कहा–क्राँति बंदूक की बैरल से आती है।

सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक क्राँतियाँ–शक्ति का प्रयोग कर धर्म युद्ध हुए, तीर्थनगरी और तीर्थस्थलों के युद्ध हुए। धर्मगुरुओं ने लड़ाइयाँ लड़ीं, अपने अनुयायियों को हथियार उठाना सिखाया। और असंख्य लोगों को अपने मत में शामिल किया। उनकी नैतिकता खून से रंगी हुई है।

संगठन शक्तिशाली बनते हैं, हथियारों से लड़ाइयाँ लड़ते हैं। मुँह में ईश्वर का नाम, और हथियार बगल में रखते हैं। सच तो ये है, कि जिस पंथ के हम अनुयायी हैं, उसी के समान हम बनते जाते हैं। ''यथा राजा तथा प्रजा'' और ''यथा गुरु तथा शिष्य''।

आज बहुत से गुरु, संगठन, पार्टी और नेता अपनी शक्ति और अधिकार, अपने धन और हथियारों के बल पर प्राप्त करते हैं। और अपना आधार न्याय, सत्य और प्रेम पर नहीं, पर लालच और घमंड पर रखते हैं।

हथियारों का गर्व से प्रदर्शन और उसका ईश्वरीय स्थान–हथियार नष्ट करने की वस्तु है। और इसका जीवित ईश्वर से कोई संबंध नहीं है। क्योंकि ईश्वर हमारा पिता और सृष्टिकर्त्ता है। वह हमें जीवनदान करता है, बचाता है। वो पापियों को बचाने संसार में आता है। और पाप का नाश करता है। हथियार शैतान के भय फैलाने के साधन हैं। हथियारों की क्राँति ईश्वरीय क्राँति नहीं है।

जो तलवार उठायेगा वो तलवार से मारा जायेगा

आज आपके सामने बहुत संगठन हैं, जो हथियारों द्वारा सरकार बदलने की

कोशिश करते हैं। क्राँति लाना चाहते हैं। अपने विरोधियों को नष्ट करते हैं। और दूसरे हैं, जो अन्य तरीकों से राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक बदलाव की क्राँति लाते हैं। इतिहास दिखाता है, कि हर नई क्राँति में लाखों विरोधियों की हत्या की जाती है। लेकिन प्रभु यीशु जगत में आते हैं। और कहते हैं, ''जो तलवार उठायेगा, वो तलवार से मारा जायेगा''।

आईए देखें ये कमज़ोरों की क्राँति है क्या?

इतिहास में एक नई क्राँति आई, जिसने अपने विश्वासियों को एक नई सृष्टि बनाया। और उन्हें अंदर से बदल दिया। जिसने आत्मिक संसार का द्वार मनुष्य के लिए खोल दिया, और बंद पड़ा मोक्षद्वार खुल गया।

आज से करीब 2000 वर्ष पूर्व, सृष्टिकर्त्ता स्वयं सृष्टि में मानव रूप धारण कर उतर आते हैं। अपने स्वर्गीय सिंहासन और ईश्वरीय वैभव को त्यागकर मनुष्य बनते हैं। एक गौशाले में, गरीब परिवार में पैदा होते हैं। अपने आप को एक नौकर का रूप देते हैं। अपने साथ ईश्वरीय सत्य लेकर आते हैं। और अपनी मुक्ति की क्राँति को परिपूर्ण करने के लिये स्वयं पवित्र खून का बलिदान क्रूस के मृत्युदंड द्वारा उठाते हैं।

प्रेम वो है जो दुश्मन को बचाने के लिये जान दे

बाइबल कहती है, ''अपनों के लिये तो कोई प्राण देने का साहस करे पर प्रेम वो है, जो दुश्मन को बचाने के लिये जान दे'' प्रभु यीशु तीसरे दिन मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लौटते हैं। और स्वर्ग में फिर विराजमान हो जाते हैं।

वो क्राँति जो एक गौशाले की कमज़ोरी में प्रारंभ होती है, उसकी विजय क्रूस की बलिवेदी पर पूरी होती है।

मुक्ति की क्राँति कमज़ोरों के बीच लाने वाले प्रभु यीशु स्वयं कमज़ोर बने। और इस संसार में कमज़ोरों की आत्मिक मोक्षयात्रा के कर्त्ता बने।

क्राँति का आह्वान् प्रभु यीशु ने इस घोषणा से किया, ''कंगालों को शुभ संदेश सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया गया है। और मुझे इसलिये भेजा गया है, कि बंधुओं को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का शुभ समाचार प्रचार करूँ। और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ।'' (लूका 4:18)

कंगालों को खुशखबरी–यह कि मोक्ष प्राप्ति के लिये धन या दान दक्षिणा की आवश्यकता नहीं है। श्रम और प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। संसार

में दर-दर भटकने की और ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है। सर्व ब्रह्मांड का सृष्टिकर्त्ता पिता परमेश्वर खोया नहीं है। हम मनुष्य खोए हुए हैं। और यीशु हमें ढूँढ़कर, स्वयं कंगाल बनकर हमारे घर मुक्ति संदेश प्रेमपूर्वक लाये हैं। अब ईश्वर के नाम पर हमें लुटने की आवश्यकता नहीं है।

बंधुओं को छुटकारा–बंधुए वे हैं, जिन्हें समाज ने, परिवार ने, रीति-रिवाजों ने, अंधविश्वासों ने बाँध रखा है। उनका छुटकारा आत्मिक शक्ति से होगा। प्रभु यीशु के वचन की सामर्थ और पवित्र आत्मा की शक्ति से होगा और वे आज़ाद होंगे, और मोक्ष प्राप्त करेंगे।

अंधों को दृष्टि–सत्य से अनजान रहना, बिना ज्योति के जीना है। सत्य हमारे आगे-आगे अंधकार को मिटाकर मोक्ष मार्ग में ले चलता है। अंधे वो नहीं हैं, जो शरीर से अंधे हैं। परमेश्वर अंधा उसे कहते हैं जो सत्य को नहीं पहचानता है। प्रभु यीशु ने कहा मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। जब हमारी आँखें खुलती हैं, तो हम पाप देख पाते हैं। हमें सच्चे जीवित ईश्वर की पहचान हो जाती है। और तंत्र-मंत्र की शैतानी शक्तियों को हम ठुकराने लगते हैं।

कुचले हुओं का छुटकारा–कुचला हुआ वो है, जो समाज के अत्याचार का शिकार बनता है। जो सबके नीचे है और आधीन है। न उसे मज़दूरी मिलती है, न आज़ादी। उसके बच्चे और परिवार निर्धनता, जातिवाद, छुआछूत और हिंसा के शिकार होते हैं। यीशु उनके घर आते हैं। उन्हें ऊपर उठाते हैं। और उन्हें स्वर्ग राज्य की खुशखबरी देते हैं।

प्रभु यीशु की क्राँति में भागीदार हम, और आप जैसे कमज़ोर लोग हैं। कंगाल, बंधुए, अंधे और कुचले हुए लोग। ये क्राँति तलवार, धन या चमत्कारों के बल पर नहीं आई है। यह प्रभु यीशु के पवित्र खून बहाने के द्वारा संपन्न हुई है। और इसके फलस्वरूप शैतान की हार हुई, और पापमोचन का उपाय मिला।

क्राँति जान लेकर नहीं, पर जान देकर प्रारंभ हुई–प्रभु यीशु ने इस क्राँति का आधार परमेश्वर का प्रेम रखा। और सत्य के द्वारा, शैतान के झूठ और हिंसा के शासन का अंत किया। यदि ऊपर लिखे किसी भी वर्ग में आप हैं। तो यह आप की क्राँति है। क्राँति के कर्त्ता प्रभु यीशु को संसार ने कमज़ोर समझकर, क्रूस पर चढ़ाया। क्रूस प्रभु यीशु का हथियार था। जिसे उठाकर और उस पर चढ़कर हम कमज़ोरों के पापों की कीमत पवित्र खून द्वारा मृत्युंजय यीशु दे सके। यह परमेश्वर की योजना थी।

इस तरह प्रभु यीशु ने संसार पर विजय प्राप्त करी।

प्रभु यीशु अपने शिष्यों के पाँव धोते हैं।

प्रभु यीशु सेवा करने के लिये आये। उन्होंने अपने शिष्यों के पाँव धोकर, उन्हें नम्रता और दीनता का संदेश सुनाया। प्रभु यीशु ने कहा जो तुममें बड़ा बनना चाहे, वो सबका नौकर बने। जो तुम्हारा शासक हो, वो गुलाम समान बने। उन्होंने अपने विश्वासियों को क्राँति संदेश देकर भेजा और कहा, ''मैं तुम्हें भेड़ की तरह भेड़ियों के बीच भेजता हूँ,''। क्योंकि क्राँति कमज़ोरों द्वारा शैतानी शक्तियों को हराकर आयेगी।

धर्म के नाम पर ईश्वर के नाम पर हथियार उठाने और धर्मयुद्ध करने से क्राँति नहीं आयेगी। पर ये परमेश्वर की आत्मा की शक्ति से आयेगी। ये धर्म की क्राँति नहीं है। ये जीवन और मुक्ति की क्राँति है।

बाइबल में लिखा है, ''बहुत ज्ञानवान, बहुत सामर्थी और न ही बहुत कुलीन परमेश्वर द्वारा बुलाये गये हैं। परंतु परमेश्वर ने संसार के मूर्खों को चुन लिया कि वे ज्ञानवानों, और निर्बलों को चुना की बलवानों को लज्जित करें। और उसने नीचों को और निरस्कृत लोगों को चुना है, कि शक्तिशाली के घमंड को मिटाएँ। (1 कुरिन्थ 1:26-28)।

प्रभु यीशु ने विजय घोषणा की और कहा, ''मैंने संसार को जीत लिया है।'' शैतान के शासन को मनुष्य के ऊपर से हटाकर परमेश्वर के राज्य में लाने वाले प्रभु यीशु हैं। क्रूस पर बलिदान द्वारा इस विजय को यीशु उन पर विश्वास करने वालों को भी देते हैं। हमें मोक्ष दान देते हैं।

क्या आप मोक्ष पाने के लिये भटकते रहे हैं?

तो प्रभु यीशु पर विश्वास से ये मोक्ष प्रार्थना करिए।

''हे प्रभु यीशु, मैं इस संसार में कंगाल, अंधा, बंधुआ और कुचला हुआ हूँ। पाप का गुलाम हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि मेरे पापों का दंड, क्रूस पर आपने उठाया है। और पवित्र खून बहाया है। मेरे पापों को क्षमा करो। मुझे पवित्र आत्मा दो, मुझे नया जीवन दो। आज से मैं आपका नाम लूँगा।''

Please visit: for new messages and Bhakti songs
www.shishyashram.com

SHISHYASHRAM
[Registered under IndianTrust Act, 1882 Reg. No-6166
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail:jawabjawab@yahoo.com